मुखपृष्ठ

साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 41, जुलाई(द्वितीय), 2018

31 जुलाई, प्रेमचंद जयंती पर विशेषः

पांच कविताएँ

पवनेश ठकुराठी 'पवन'

1.कितने होरी

सदियों से दलित, शोषित, दमित
असहाय, निरूपाय
रूढ़िवादी बंधनों से जकड़े
बेबसी की शाख को पकड़े
जमींदारी और महाजनी
मानसिकता से प्रताड़ित
सिर्फ एक गऊ की ख्वाहिश
मन में साधे
न जाने कितने होरी !!!

2.सूरदास

रंगभूमि का एक खिलाड़ी
जो खेलता है
जिंदगी के मैदान में
दृष्टिबाधित होते हुए भी
देता है परिचय

दिव्यदृष्टि का
लड़ता है अपनों के लिए
अपनी माटी के लिए
लगातार अभावों और
दुखों को अपनाता हुआ भी
वह हंसी को जीता है
खेलता है
एक मंजे हुए खिलाड़ी की तरह।

3.कितनी मालती

बाहर से तितली
भीतर से मधुमक्खी
मालती !
दुर्लभ होती धनिया और झुनियां
सर्वत्र विचरती मालती
मालती की सहेलियां
मेहता के आस-पास थिरकती
खन्ना को लुभाती
मालती अब एक नहीं रही
अनेक हो गईं हैं।

4.पूस की एक और रात

जाड़े से ठिठुरता हल्कू
खड़ा हुआ है
कंबल मांगने वालों की कतार में।
उसके कुत्ते झबरा को
पेड़ पर चढ़े वानर
चिढ़ा रहे हैं।
रात अभी पूस की ही है
हल्कू के ठिठुरने के साथ-साथ
प्रजातंत्र भी ठिठुर रहा है
लेकिन कंबल बांटकर
उस पर मरहम लगाने की
कोशिश की जा रही है।

5.नमक का दारोगा

रात्रि के दस बजे हैं
पंडित आलोपीदीन के ट्रक
आज भी ढो रहे हैं
नमक की हजारों बोरियां
पंडित आलोपीदीन
अपने आवास पर निश्चिंत होकर
खर्राटे ले रहे हैं
इधर धड़ाधड़ ट्रक पर ट्रक

चले जा रहे हैं
नमक का दारोगा
चौकी के सामने खड़ा होकर
एक हाथ अपनी मूँछों पर फेर रहा है
दूसरा अपनी जेब पर।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें